पुस्तक समीक्षा

उपन्यास का नाम - वह लड़की

लेखिका का नाम - सुशीला टाकभौरे

प्रकाशक - वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली

प्रकाशन वर्ष - 2017

भारतीय समाज में पुरुषसत्तात्मक संस्कृति में नारी वर्ग को हमेशा हाशिए पर रखा गया है| लेकिन विगत कुछ दशकों से स्त्रियां अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करते हुए लड़ रही हैं | फिर भी सच्चाई यह है कि स्त्रियों पर अन्याय अत्याचार लगातार हो रहे हैं लेकिन समय के साथ स्त्री के प्रति समाज की धारणाएं भी बदली हैं | भारतीय मानसिकता में नारी के प्रति ये सामाजिक मुल्य अभी भी मौजूद हैं | समाज की स्त्रियां तो अपने प्रयत्न और व्यवहार से इनसे मुक्त हो रही हैं | मगर पिछड़े और दलित समाज में ये विचार अभी भी व्याप्त हैं | जिनके विरुद्ध संघर्ष करते हुए स्त्रियों को दोहरा शोषण सहना पड़ता है, स्त्री होने का भी और दलित स्त्री होने का भी| समाज में स्त्रियों के प्रति दृष्टिकोण बदले इस उदेद्श्य के साथ हिन्दी साहित्य की चर्चित लेखिका ने अपने उपन्यास 'वह लड़की' के माध्यम से नारी पत्रों का जीवन समाज के समक्ष प्रस्तुत किया हैं | वह लड़की उपन्यास में नारी जीवन की व्यथा और समस्याएं चित्रित हैं| उपन्यास में लेखिका का स्वर यही है कि जब स्त्रियां अपने भविष्य के लिए अपनी प्रगति और सामाजिक स्थिति में परिवर्तन के लिए अपने निर्णय स्वयं लेंगी तभी वे अन्याय पूर्ण समाज व्यवस्था और दकियानूसी रूढ़ि-परम्पराओं को बदल सकेंगी |

'वह लड़की' उपन्यास में मुख्य पात्र शैला जिनका जीवन त्रासदी में बिता हैं | फिर भी दूसरों के जीवन में त्रासदी देखकर वह उन्हें समझाती की इनका विरोध करो| उन्हें सबल बनाती हैं साथ ही उनके हक़ के लिए लड़ना सिखाती है क्योंकि शैला खुद तो कोमल ह्रदय की हैं साथ ही साथ वह एक समाज सुधारक भी है | शैला की परवरिश एक बहुत अच्छे परिवार में हुई है | जहां उसे अच्छा ज्ञान और उच्च शिक्षा प्राप्त हुई है | जिससे की वह समाज की विसंगतियों को समझ जाती है|

आलोच्य उपन्यास के अंतर्गत सभी पात्र आपस में जुड़े हुए है| उपन्यास के माध्यम से पुरानी पीढ़ी और नयी पीढ़ी को इस प्रकार से आपस में जोड़ा गया हैं कि किस तरह से पुरानी पीढ़ी को अशिक्षित या फिर अल्पशिक्षित रखा जाता था जिससे की उनकी सोच भी उतनी ही सिमित होती है उन्हें बचपन से ही समाज के कायदे कानून सिखाए जाते थे| कुछ ऐसी ही स्थिति शैला की थी जिसने बचपन में ही यह जान लिया था की एक स्त्री का जीवन कैसे होता है| शैला की ममेरी बेहन शम्मा जिसकी शादी १५ साल की उम्र में ही हो जाती हैं जो की शम्मा इतनी सी उम्र में घरेलू हिंसाचार का शिकार होती है| शैला को उसका दर्द देखा नहीं जाता| वह उसे बहुत समझाती हैं कि खुद कमाओं और अपनी बच्चियों का परवरिश करो| लेकिन शम्मा समाज के बंधनो से बंधी हुई है| वह शैला की बात नहीं सुनती और सब कुछ सहते हुए अपना जीवन गुजारती हैं| बाद में उसे टी.बी हो जाता हैं | यह दुःख शम्मा सह नहीं पाती है और उसकी मृत्यु होती है| जब शैला यह बात सुनती हैं तब उसे यकीन ही नहीं होता| जब शैला इस बात की जाँच पड़ताल करती हैं तब उसे पता चलता हैं की शम्मा टी.बी की बीमारी से ठीक हो गयी थी| उसके ससुराल वालों ने उसे मार डाला| लेखिका कहना चाहती है कि यदि शम्मा इन समाज की विसंगतियों में उलझी न होती तो आज न केवल एक अच्छा जीवन जी रही होती बल्कि अपनी बेटियों को अच्छा जीवन दे रही होती|

उपन्यास में जिस प्रकार शम्मा सब कुछ चुपचाप सहती रही ठीक उसी प्रकार शैला की सहेली नमिता भी वही कर रही थी | एक नारी पर जब विपदा आती है तो खुद उसे जन्म देने वाले माता-पिता भी उसका साथ छोड़ देते है| नमिता के साथ भी यही हुआ उसने अपने माता-पिता से कहा कि **“मुझे ससुराल में बहुत ज्यादा प्रताड़ित किया जाता है| मैं वहा नहीं जाउंगी जो उसके घर वालो ने उससे कहा की हमें इस समाज में जीना हैं लोगों के बीच रहना है अगर तू ऐसा कहेगी तो तेरी बाद तेरी बहनों का क्या होगा| उनकी शादी हम कैसे करेंगे ? तुझे जाना ही होगा|”** नमिता उनकी बातों को इनकर नहीं कर सकी जिससे की वह ससुराल जाने को तैयार हो गई| नमिता के ससुराल का संबंध शैला से था| शैला को जब पता चला तो वह नमिता के ससुराल गई तब उसे पता चला कि वह उसके साथ क्या हो रहा है| नामिता १० पास थी| शैला ने उसे बहुत समझाया क्योंकि वह नहीं चाहती थी कि नमिता की हालत शम्मा जैसी हो| शैला कहने पर नमिता अपने ऊपर हो रहे अत्याचारों के खिआफ़ आवाज उठाती है| जिसे उसका जीवन दूभर होने से बचा और उसके ससुराल वालों को एक सबक मिला और वह डर जाते है| वे

नमिता के साथ अच्छा व्यवहार करने लगते हैं| जिसके कारण नमिता की स्थिति ठीक हो जाती हैं|

उपन्यास में शैला समाज सुधारक के रूप में सामने आती है| उसे दूसरों के जीवन में तकलीफे देख कर बहुत दुःख होता था| वह नहीं चाहती थी कि कोई भी लड़की किसे के पैरों के नीचे दबी रहे| हर लड़की को अपने-अपने तरीके से जीने का हक़ है| जिसे वह हर जगह जा कर लोगों को बताती थी| कुछ समय बाद उसे अपनी बहन ममता का पता चलता है| ममता उसकी बहन थी| वह ममता के बारे में सुन कर बहुत खुश होती है| मगर जब वह उसकी जिंदगी के बारे में जानती है तब वह बुरी तरह से टूट जाती है क्योंकि ममता के घर वालों ने तो उसकी पहचान ही समाज से छुपा रखी थी| आखिर कब तक छुपाते ? एक दिन शैला उसका पता लगाती है| मगर यहाँ स्थिति कुछ और ही हो गयी थी| ममता पढ़ी लिखी थी लेकिन बच्चों की जिम्मेदारी से और आर्थिक समस्याओं के कारण ममता परेशान रहती है| उसका पति बेरोजगार हो जाता है| बाद में ममता नौकरी करके अपनी आर्थिक उन्नति करती है जिससे उसको मानसिक शांति भी मिलती है| उपन्यास में शम्मा, नमिता और ममता ने जो कुछ भी सहा, वह उनकी नई पीढ़ी की बेटियाँ नहीं सहती| वह अत्याचार का विरोध करती है और अपनी एक अलग पहचान बनती हैं|

उपन्यास में चित्रित स्त्रियां जो भी शोषण सह रही हैं | उसे यहाँ केवल चित्रित ही नहीं किया गया हैं बल्कि उससे उबरने का मार्ग भी बताय गया है| जहाँ हम एक तरफ यह देख रहे हैं कि पुरानी पीढ़ी ने कितना कुछ सहा है वही दूसरी तरफ नयी पीढ़ी उस मानसिकता से मुक्त हैं और यही लेखिका का उद्देश्य रहा है| लेखिका ने दो पीढ़ियों के यथार्थ चित्रित करते हुए स्पष्ट किया है कि कैसे नयी पीढ़ी पिछली पीढ़ी से सबलता से आगे बढ़ रही हैं |

कु. सुनीता जैसवाल,
एम. ए. हिन्दी प्रथम वर्ष